



अब घर से स्कूल की दूरी नहीं बनेगी बेटियों की मजबूरी



205 नई मुफ्त सरकारी स्कूल बसों की शुरुआत

10,000+ बच्चे लाभार्थी

“

स्कूल कहीं भी हो, वर्ल्ड क्लास शिक्षा हर बच्चे के घर तक पहुंचनी चाहिए। अब पंजाब का हर बच्चा आगे बढ़ने का पूरा अवसर पायेगा और हर बच्चा मिलकर रंगला पंजाब बनाएगा।

”

भगवंत सिंह मान
मुख्यमंत्री, पंजाब

मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान
के व्हाट्सएप चैनल से जुड़ें



बालिकाओं को बनाना होगा आत्मनिर्भर

भारत में हर साल 24 जनवरी को लड़कियों को सशक्त बनाने और उनके समर्पण अनेक बालिकाओं के समाधान के महत्व को उजागर करने के लिए राष्ट्रीय बालिका दिवस मनाया जाता है। यह लड़कियों के अधिकारों और अवसरों को बढ़ावा देते हुए उनकी ताकत और बल का जशन मनाने का दिन है। महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा 2008 में पहली बार राष्ट्रीय बालिका दिवस मनाया जाना शुरू किया गया था। देश में लड़कियों द्वारा समान की जाने वाली सभी असमानताओं के बारे में लोगों के बीच जागरूकता फैलाना वालिकाओं के अधिकारों के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देना, इसे मनाने का मुख्य उद्देश्य है। हमारे देश में बड़ी बिंदुनान हैं कि हम बालिका का पूजन तो करते हैं लेकिन बहुत खुद के घर बालिका जम लेते हैं तो हम दुखी हो जाते हैं। देश में सभी जगह पेसा देखा जा सकता है। देश के कई प्रदेशों में तो बालिकाओं के जन्म को अभियान तक माना जाता है। लेकिन बालिकाओं को अभियान मनाने वाले लोग यह क्यों खूल जाते हैं कि वह उस देश के नामिकर है, जहां रानी लक्ष्मीबाई जैसी विरागिणाओं ने देश के लिए अपने प्रणय न्योजनाकार कर दिए थे। 24 जनवरी 1966 को पहली बार बौत्र प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने अपना कार्यभार संभाला था। उस दिन की यात्रा में राष्ट्रीय बालिका दिवस मनाया जाने लगा। राष्ट्रीय बालिका दिवस 2024 का विषय है—आइए हम अपनी लड़कियों को मजबूत, स्वतंत्र और निड़ा बनाएं। भारत में आज हर क्षेत्र में बालिकाओं के अंगे बदले के बाबूजूद वह अनेकों कुरीतियों की शिकार हैं। ये कुरीतियों उसके अंगे बदले में बाधाएं उत्पन्न करती हैं। पढ़े—लिखे लोग और जागरूक समाज भी इस समस्या से अद्वृता नहीं है। आज हजारों लड़कियों को जन्म लेने से पहले ही यार दिया जाता है। आज भी समाज के अनेक घरों में बेटा, बेटी में भेद किया जाता है। बेटियों को बेटों की तरह अच्छा खाना और अच्छी शिक्षा नहीं दी जाती है। जन्मिति में आज भी बेटियों को बोझ समझा जाता है। हमारे यहाँ आज भी बेटी की ऊंचाई है उसकी परिवर्ष से ज्यादा उसकी शादी की ऊंचाई है। आज महीनी होती शादियों के कारण बेटी का बाप हर समय इस बात को लेकर चिंतित नजर आता है कि उसकी बेटी की शादी की व्यवस्था कैसे होंगी। समाज में व्याप इसी सोच के चलते कन्या भूषण हत्या पर रोक नहीं लग पायी है। कोख में कार्यालयों को मार देने के कारण समाज में आज लड़कियों की काकी कमी हो गयी है। देखा जाय तो अगर समाज में बेटियों को भी उचित शिक्षा और सम्मान मिले तो कभी भी बेटियों किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं रहेंगी। इसलिए यह यह कहा जाय की बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं योजना नहीं, हम सबकी एक जिम्मेदारी है। तो इसमें कोई गलत नहीं है। यदि हम सभी एक अच्छे समाज का निर्माण करना चाहते हैं तो हम सबका यही फर्ज बनता है कि हम इन बेटियों को भी भयभुक्त वातावरण में पढ़ायें। उन्हें इतना सशक्त बनायें कि खुद गर्व से कह सके कि देखो वह हमारी बेटी है जो इन्हाँ बड़ा काम कर सकता है। आज लड़कियों लड़कों से किसी भी क्षेत्र में कमतर नहीं है। दुश्कर कार्य लड़कियों सफलतापूर्वक कर रही है। देश में हर क्षेत्र में महिला शक्ति को पूरी विस्तृति से काम करते देखा जा सकता है। समाज के पहले निखें लोगों को आगे आकर कन्या भूषण हत्या जैसे घटनाएं को समझा कर उनकी सोच में बदलाव लाना होगा। लोगों को इस बात का संकल्प लेना होगा कि ना तो गर्भ में कन्या की हत्या करेंगे तो ना ही किसी को करने देंगे तभी देश में कन्या भूषण हत्या पर रोक लग पाना संभव हो पायेगा। एक तरफ जहाँ बेटी को जन्मते ही मरने के लिये लावारिश छोड़ दिया जाता है। वहीं झुँझुनू जिले की मोहना सिंह जैसी बालिकाओं भी हैं जो आज देश में फैटिट प्लेन उड़ा कर जिले का पूरा देश में मान बढ़ा रही हैं। समाज में सभी को मिलकर राष्ट्रीय बालिका दिवस के दिन हमें लड़का-लड़की में भेद नहीं करने के समाज के लोगों को लिंग समानता के बारे में जागरूक करने की प्रतिज्ञा लेनी चाहिए। पिछले कुछ वर्षों में देश में जन्म के समय लिनानुपात में बढ़ोती रुख संकेत है।

महाकुंभ: मानवता के कल्याण के लिए उद्घोष

विश्व संत्रस्त है। अनेक देश युद्ध की विभीषिका में हैं। मानवता कराह रही है। स्त्रियों, बृद्धों, मासूम बच्चों की लाशें गिनती से बाहर हैं। पश्चिम में बारूद ही बारूद है। भारत के पास -पड़ोस में भी बारूदी धूएं से बातावरण दूषित है। मनुष्य ही मनुष्य का दुश्मन बनकर रक्त पिपासु हो गया है। किसी देश का नाम लें यह जरूरी नहीं किन्तु दृश्य भयावह है। कई वर्षों से असमान में तोप, रॉकेट और सुपरसोनिक युद्ध विमान को हाराम मचाए हुए हैं। ऐसे माहोल में भारत की सनातन संस्कृति अपने सुष्ठु पवर के माध्यम से विश्व के कल्याण का उद्घोष कर रही है। गंगा, यमुना और सरस्वती के पवित्र विवेणों के जन्म को अभियान देता है। लेकिन बालिकाओं को अभियान तक मान जाता है। लेकिन बालिकाओं को अभियान मनाने वाले लोग यह क्यों खूल जाते हैं कि वह उस देश के नामिकर है, जहां रानी लक्ष्मीबाई जैसी विरागिणाओं ने देश के लिए अपने प्रणय न्योजनाकार कर दिए थे। 24 जनवरी 1966 को पहली बार बौत्र प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने अपना कार्यभार संभाला था। उस दिन की यात्रा में राष्ट्रीय बालिका दिवस मनाया जाने लगा। राष्ट्रीय बालिका दिवस 2024 का विषय है—आइए हम अपनी लड़कियों को मजबूत, स्वतंत्र और निड़ा बनाएं। भारत में आज हर क्षेत्र में बालिकाओं के अंगे बदले के बाबूजूद वह अनेकों कुरीतियों की शिकार हैं। ये कुरीतियों उसके अंगे बदले में बाधाएं उत्पन्न करती हैं। लेकिन बालिकाओं को अभियान तक मान जाता है। लेकिन बालिकाओं को अभियान मनाने वाले लोग और जागरूक समाज भी इस समस्या से अद्वृता नहीं है। आज हजारों लड़कियों को जन्म लेने से पहले ही यार दिया जाता है। आज महीनी होती शादियों के कारण बेटा की ऊंचाई होती है उसकी परिवर्ष से ज्यादा उसकी शादी की ऊंचाई है। आज महीनी होती शादियों के कारण बेटी का बाप हर समय इस बात को लेकर चिंतित नजर आता है कि उसकी बेटी की शादी की व्यवस्था कैसे होंगी। समाज में व्याप इसी सोच के चलते कन्या भूषण हत्या पर रोक नहीं लग पायी है। कोख में कार्यालयों को मार देने के कारण समाज में आज लड़कियों की काकी कमी हो गयी है। देखा जाय तो अगर समाज में बेटियों को भी उचित शिक्षा और सम्मान मिले तो कभी भी बेटियों किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं रहेंगी। इसलिए यह यह कहा जाय की बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं योजना नहीं, हम सबकी एक जिम्मेदारी है। तो इसमें कोई गलत नहीं है। यदि हम सभी एक अच्छे समाज का निर्माण करना चाहते हैं तो हम सबका यही फर्ज बनता है कि हम इन बेटियों को भी भयभुक्त वातावरण में पढ़ायें। उन्हें इतना सशक्त बनायें कि खुद गर्व से कह सके कि देखो वह हमारी बेटी है जो इन्हाँ बड़ा काम कर सकता है। आज लड़कियों लड़कों से किसी भी क्षेत्र में कमतर नहीं है। दुश्कर कार्य लड़कियों सफलतापूर्वक कर रही है। देश में हर क्षेत्र में महिला शक्ति को पूरी विस्तृति से बालिकाओं के लिए देखा जा सकता है। समाज के पहले निधनों द्वारा योगदान देने के लिए अपने जीवन की ऊंचाई बढ़ावा देना चाहिए। लेकिन बालिकाओं को अभियान तक मान जाता है। लेकिन बालिकाओं को अभियान मनाने वाले लोग और जागरूक समाज भी इस समस्या से अद्वृता नहीं है। आज हजारों लड़कियों को जन्म लेने से पहले ही यार दिया जाता है। आज महीनी होती शादियों के कारण बेटा की ऊंचाई होती है उसकी परिवर्ष से ज्यादा उसकी शादी की ऊंचाई है। आज महीनी होती शादियों के कारण बेटी का बाप हर समय इस बात को लेकर चिंतित नजर आता है कि उसकी बेटी की शादी की व्यवस्था कैसे होंगी। समाज में व्याप इसी सोच के चलते कन्या भूषण हत्या पर रोक नहीं लग पायी है। कोख में कार्यालयों को मार देने के कारण समाज में आज लड़कियों की काकी कमी हो गयी है। देखा जाय तो अगर समाज में बेटियों को भी उचित शिक्षा और सम्मान मिले तो कभी भी बेटियों किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं रहेंगी। इसलिए यह यह कहा जाय की बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं योजना नहीं, हम सबकी एक जिम्मेदारी है। तो इसमें कोई गलत नहीं है। यदि हम सभी एक अच्छे समाज का निर्माण करना चाहते हैं तो हम सबका यही फर्ज बनता है कि हम इन बेटियों को भी भयभुक्त वातावरण में पढ़ायें। उन्हें इतना सशक्त बनायें कि खुद गर्व से कह सके कि देखो वह हमारी बेटी है जो इन्हाँ बड़ा काम कर सकता है। आज लड़कियों लड़कों से किसी भी क्षेत्र में कमतर नहीं है। दुश्कर कार्य लड़कियों सफलतापूर्वक कर रही है। देश में हर क्षेत्र में महिला शक्ति को पूरी विस्तृति से बालिकाओं के लिए देखा जा सकता है। समाज के पहले निधनों द्वारा योगदान देने के लिए अपने जीवन की ऊंचाई बढ़ावा देना चाहिए। लेकिन बालिकाओं को अभियान तक मान जाता है। लेकिन बालिकाओं को अभियान मनाने वाले लोग और जागरूक समाज भी इस समस्या से अद्वृता नहीं है। आज हजारों लड़कियों को जन्म लेने से पहले ही यार दिया जाता है। आज महीनी होती शादियों के कारण बेटा की ऊंचाई होती है उसकी परिवर्ष से ज्यादा उसकी शादी की ऊंचाई है। आज महीनी होती शादियों के कारण बेटी का बाप हर समय इस बात को लेकर चिंतित नजर आता है कि उसकी बेटी की शादी की व्यवस्था कैसे होंगी। समाज में व्याप इसी सोच के चलते कन्या भूषण हत्या पर रोक नहीं लग पायी है। कोख में कार्यालयों को मार देने के कारण समाज में आज लड़कियों की काकी कमी हो गयी है। देखा जाय तो अगर समाज में बेटियों को भी उचित शिक्षा और सम्मान मिले तो कभी भी बेटियों किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं रहेंगी। इसलिए यह यह कहा जाय की बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं योजना नहीं, हम सबकी एक जिम्मेदारी है। तो इसमें कोई गलत नहीं है। यदि हम

સચિવ સંવર્ગ કા ઉત્પીડન કર્તાઈ બદશાહ નહીં શ્રી અખિલેશ મિશ્રા



કેનવિજ ટાઇમ્સ સંવાદદાતા

હૈદરગઢ બારાબંકી। સચિવ સંવર્ગ કે હિતોની કી રક્ષા કરના મેરો નૈતિક જિમ્બેરી હૈ ઇનકા શોષણ કિયો ભી રિથ્મ મેં બર્દાશ્ત નહીં કિયા જાએ ઉત્ત્ત્વ બતા પંચાયત સચિવ સંવર્ગ કે બ્લાક

અધ્યક્ષ નિયુક્ત કિએ એ અખિલેશ મિશ્રા ને કહી ઉત્ત્ત્વને આગે કહા મુજ્જે જો ભી જિમ્બેરી સૌંપી ગઈ હૈ ઉસકા નિર્વહન ઈમાનદારી પૂર્વક કરુંગા. કર્મચારીઓની કાફિ મેરે લિએ સર્વોપરિ હોણા! બતાતે ચરણે કિ પંચાયત સચિવ અખિલેશ મિશ્રા કા તબાદાલ વિકાસ ખણ્ડ બનીકોડર હો

ગયા થા નિયમ વિરુદ્ધ તરીકે સે તથાદળે કે વિરોધ મેં અખિલેશ મિશ્રા હાઈ કોર્ટ પછે થે જાહા પર ન્યાયાલય ને સ્થાનતાણ આદેશ પર સ્ટે દેતે હુએ અખિલેશ મિશ્રા કે હૈદરગઢ વાપસી હેતુ ડીપીઓની કો અદેશિત કિયા થા અનુપાલન કરતે ન્યાયાલય કે આદેશ કે અનુપાલન કરતે

સીડીપીઓને કિયા આંગનબાડી કા ઔચક નિરીક્ષણ

સિરોલીગોસપુર બારાબંકી। બાલ વિકાસ પરિયોજન અધિકારી અચ્ચના વર્મા ને ડૂડી સ્થિત આંગનબાડી કેંદ્ર કા અચાનક દોર્યા કિયા। નિરીક્ષણ કે દોરાન ઉત્ત્ત્વને કેંદ્ર કી વ્યક્તસ્થાઓની ગાંધીજિંગ પર ધ્યાન કેનેદ્રિત કિયા એ અનુભૂતિ પંજિકા ઔર ઓપીડી રજિસ્ટર તક નહીં દિખાએ ગણ। સીએમેસ કાર્યાલય મેં બંદ હોણે કા હવાલા દેકર ચાંપી તક ઉપલબ્ધ નહીં કરાઈ ગઈ। નિરીક્ષણ મેં એકસપાયર દવાએ ભી મિલ્લોની, જિનકા ઊચી વાડ મેં ભર્તી તીન મરીઓની રિકોર્ડ ભી વ્યવસ્થિત નહીં પાયા ગયા અનુભૂતિકેતનગા કે સમૃદ્ધાંકિત સ્વાસ્થ્ય કેંદ્ર મેં ભી સ્થિત ચંતાજનક થી। પ્રભારી ચિકિત્સાધિકારી ડૉ. વાઈ.પી. મૌર્યા ઔર એલએમો ડૉ. નિધિ ગુપ્તા દેણોને એક સાથ

અધ્યક્ષ ને કલેક્ટ્રેટ કે વિભિન્ન અનુભાગોની સહિત પરિસર કા કિયા ઔચક નિરીક્ષણ

કેનવિજ ટાઇમ્સ સંવાદદાતા

બારાબંકી। જિલાધિકારી શશાંક ત્રિપાઠી ને આજ કલેક્ટ્રેટ કે વિભિન્ન વિભાગોને એવાં કાર્યાલયની તથા પરિરક્ષા કા પ્રાતાં કરીબનું રસ પારે જો અનુભાગ, શશ અનુભાગ, ઝાડુંઅનુભાગ, રાજસ્વ અધિકારીઓ, સંયુક્ત કાર્યાલય, ખાદ્ય સુરક્ષા એવાં ઔષ્ણી પ્રશાસન, ચકબંદી, ઇંડિસ્ટ્રિયલ અંફિસ્સ સહિત કલેક્ટ્રેટ પરિરક્ષા આર કા નિરીક્ષણ કિયા ઔર કહા કિ સાથી કાર્યાલયોની કો હાર હાલ મેં સુચ્છ બનાએ રહ્યે જાણે કે પ્રયાસ હર સ્તર પર સતત પ્રક્રિયા કે તહુત કિએ જાને ચાહિએ। ઉત્ત્વને કરી કાર્યાલયોની મેં ઉપરસ્થિત પંજિકા તથા પત્રાંની કી નિરીક્ષણ કિયા। ઉત્ત્વને આપા અનુભાગ, શશ અનુભાગ, ઝાડુંઅનુભાગ, રાજસ્વ અધિકારી, સંયુક્ત કાર્યાલય, ખાદ્ય સુરક્ષા એવાં ઔષ્ણી પ્રશાસન, ચકબંદી, ઇંડિસ્ટ્રિયલ અંફિસ્સ સહિત કલેક્ટ્રેટ પરિરક્ષા આર કા નિરીક્ષણ કિયા ઔર કહા કિ સાથી કાર્યાલયોની કો હાર હાલ મેં સુચ્છ બનાએ રહ્યે

અધ્યક્ષ ને કલેક્ટ્રેટ કે વિભિન્ન અનુભાગોની સહિત પરિસર કા કિયા ઔચક નિરીક્ષણ

કેનવિજ ટાઇમ્સ સંવાદદાતા

બારાબંકી। જિલાધિકારી શશાંક ત્રિપાઠી ને આજ કલેક્ટ્રેટ સ્થિત લોકસભાગાર મેં નવાગત જિલાધિકારી શશાંક ત્રિપાઠી ને જિલા બાર એસોસિએશન કે પદાધિકારીઓની કી વિભિન્ન કાર્યાલયોની કી નિરીક્ષણ કિયા। પદાધિકારીઓની કી વિભિન્ન સમસ્યાઓનો સુનને બાદ ઉત્ત્વ નિરાકરણ કા આધાસન દિયા જિલાધિકારી શ્રી ત્રિપાઠી ને કહા કિ ન્યાય કી ઉમ્મીદ મેં આને વાલે વાદિયોની હિત સર્વોપરિ હૈ, ઉત્તી પર કાર્યાલયોની કી નિરીક્ષણ કિયા। ઉત્ત્વને આપા અનુભાગ, શશ અનુભાગ, ઝાડુંઅનુભાગ, રાજસ્વ અધિકારી, સંયુક્ત કાર્યાલય, ખાદ્ય સુરક્ષા એવાં ઔષ્ણી પ્રશાસન, ચકબંદી, ઇંડિસ્ટ્રિયલ અંફિસ્સ સહિત કલેક્ટ્રેટ પરિરક્ષા આર કા નિરીક્ષણ કિયા ઔર કહા કિ સાથી કાર્યાલયોની કો હાર હાલ મેં સુચ્છ બનાએ રહ્યે

અધ્યક્ષ ને કલેક્ટ્રેટ કે વિભિન્ન અનુભાગોની સહિત પરિસર કા કિયા ઔચક નિરીક્ષણ

કેનવિજ ટાઇમ્સ સંવાદદાતા

બારાબંકી। કલેક્ટ્રેટ સ્થિત લોકસભાગાર મેં નવાગત જિલાધિકારી શશાંક ત્રિપાઠી ને આજ કલેક્ટ્રેટ કે વિભિન્ન વિભાગોને એવાં કાર્યાલયની તથા પરિરક્ષા કા પ્રાતાં કરીબનું રસ

અધ્યક્ષ ને કલેક્ટ્રેટ કે વિભિન્ન અનુભાગોની સહિત પરિસર કા કિયા ઔચક નિરીક્ષણ

કેનવિજ ટાઇમ્સ સંવાદદાતા

બારાબંકી। કલેક્ટ્રેટ સ્થિત લોકસભાગાર મેં નવાગત જિલાધિકારી શશાંક ત્રિપાઠી ને આજ કલેક્ટ્રેટ કે વિભિન્ન વિભાગોને એવાં કાર્યાલયની તથા પરિરક્ષા કા પ્રાતાં કરીબનું રસ

અધ્યક્ષ ને કલેક્ટ્રેટ કે વિભિન્ન અનુભાગોની સહિત પરિસર કા કિયા ઔચક નિરીક્ષણ

કેનવિજ ટાઇમ્સ સંવાદદાતા

બારાબંકી। કલેક્ટ્રેટ સ્થિત લોકસભાગાર મેં નવાગત જિલાધિકારી શશાંક ત્રિપાઠી ને આજ કલેક્ટ્રેટ કે વિભિન્ન વિભાગોને એવાં કાર્યાલયની તથા પરિરક્ષા કા પ્રાતાં કરીબનું રસ

અધ્યક્ષ ને કલેક્ટ્રેટ કે વિભિન્ન અનુભાગોની સહિત પરિસર કા કિયા ઔચક નિરીક્ષણ

કેનવિજ ટાઇમ્સ સંવાદદાતા

બારાબંકી। કલેક્ટ્રેટ સ્થિત લોકસભાગાર મેં નવાગત જિલાધિકારી શશાંક ત્રિપાઠી ને આજ કલેક્ટ્રેટ કે વિભિન્ન વિભાગોને એવાં કાર્યાલયની તથા પરિરક્ષા કા પ્રાતાં કરીબનું રસ

અધ્યક્ષ ને કલેક્ટ્રેટ કે વિભિન્ન અનુભાગોની સહિત પરિસર કા કિયા ઔચક નિરીક્ષણ

કેનવિજ ટાઇમ્સ સંવાદદાતા

બારાબંકી। કલેક્ટ્રેટ સ્થિત લોકસભાગાર મેં નવાગત જિલાધિકારી શશાંક ત્રિપાઠી ને આજ કલેક્ટ્રેટ કે વિભિન્ન વિભાગોને એવાં કાર્યાલયની તથા પરિરક્ષા કા પ્રાતાં કરીબનું રસ

અધ્યક્ષ ને કલેક્ટ્રેટ કે વિભિન્ન અનુભાગોની સહિત પરિસર કા કિ

